IJAER/January-February- 2020/Volume-8/Issue-4 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

हिन्दी भाषा का विश्वव्यापी रुप

Dr. Asha Mishra
Principal Ramadevi Mahila PG Mahavidyalaya
Nua
Jhunjhunju Rajasthan

सार

यह शोध हिन्दी भाषा का विश्वव्यापी रुप में व्यक्त किया गया है इसमें हिंदी प्राथमिक शोध हिंदीभाषा का विश्व में बोलने बालो की संख्या और उसकी व्यापकता को दर्शाता है वही द्वितीय शोध पाठय – पुस्तको ,से संग्रहित किया गया है जो हिंदी भाषा की महत्ता को दर्शाता है,तथा हिंदीभाषा में शिक्षा का विशलेषण भी इस शोध में किया है जो हमें वर्तमान में हिंदी भाषा की महत्ता के साथ उसकी व्यापकता भी दर्शाता है क्योकि प्राचीनता से लेकर वर्तमान तक हिंदी भाषा का मत्वपूर्ण स्थान रहा है जिसे इस शोध में बताया गया है।

मुख्य शब्दः हिंदी भाषा,वैश्वीकरण,

प्रस्तावना

विश्व में हिंदी भाषी करीब 70 करोड़ लोग हैं। यह तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। 1. 12 अरब बोलने वालों की संख्या के साथ अंग्रेजी पहले स्थान पर है। चीनी भाषा मेंडरिन बोलने वाले करीब 1.10 अरब हैं। हिंदी की वर्तमान स्थिति में कहीं न कहीं वैश्वीकरण का योगदान है। हालांकि विश्लेषक वैश्वीकरण को मूल रूप से एक आर्थिक संकल्पना मानते हैं। जो भारतीय समाज और संस्कृति अपनी पांच हजार साल से ज्यादा पुरानी होने पर गर्व करती थी उसे वैश्वीकरण ने एक झटके में बदल दिया है। इसका असर हिंदी पर भी पड़ा है। वैश्वीकरण की मूल संकल्पना व्यापार, विदेशी निवेश द्वारा आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक व्यवस्था पर अधिग्रहण तथा आपसी समन्वय, आदान–प्रदान के माध्यम से एक मंच का निर्माण करने की प्रक्रिया के रूप में उभरती है। इन सब में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

वैश्वीकरण के बाद हिंदी भी एक नई भूमिका में हमारे सामने आई है। पर भारत में आज भी हिंदी की भूमिका आम आदमी के सपने और हकीकत के बीच संतुलन बनाती और हिचकोले खाती हुई भाषा की है। हिंदी की यह स्थिति दरअसल राजशक्ति और लोकशक्ति के बीच आपसी समन्वय की कमी की वजह से है। राजशक्ति इसलिए कि गणतांत्रिक भारत का संविधान उसे संघ सरकार की राजभाषा के रूप में अधिकार प्रदान करता है। मगर अंग्रेजी मानसिकता उसे यह अवसर ही नहीं देती कि वह फल–फूल सके। फिर भी, लोकशक्ति हिंदी का स्वभाव है, उसकी बुनियाद है, जिसे वह छोड़ नहीं सकती। और इसी का नतीजा है हिंदी का विकास। हिंदी वहीं ज्यादा फली–फूली है जहां लोकशक्ति का असर है।

वैश्वीकरण के दौर में हिंदी की महत्ता

वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण, निजीकरण, उदारीकरण व बाजारवाद में से किसी भी नाम से पुकारिए, भारत में यह प्रक्रिया उन्नीस सौ नब्बे के दशक में आरंभ हुई थी । इस युग में कोई सीमा, कोई सरहद या कोई दीवार नहीं हैं अपितु यह तो पूरे विश्व को एक ग्राम में तब्दील करने की ऐसी अवधारणा है जिसने पूरी दुनिया की तस्वीर ही बदल कर रख दी है वैश्वीकरण की प्रक्रिया आरंभिक दौर में भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में हिंदी की तुलना में अंग्रेजी भाषा का महत्व बढ़ा अवश्य था परंतु धीरे–धीरे उसकी गति धीमी होती चली गई । विश्व बाजार व्यवस्था की इस प्रकृति से भारत अछूता नहीं रह सकता था उसे भी वैश्विक मंडी में देर सबेर खड़ा होना ही था । यह भी जग जाहिर है कि वैश्वीकरण ने जहां एक तरफ मुक्त बाजार की दलीलें पेश की वहीं दूसरी तरफ दुनिया में एकक नई उपभोक्ता संस्कृति को भी जन्म दिया आजकल संयुक्त राष्ट्र और विश्व की प्रमुख भाषाओं में हिंदी को शुमार करने की ठोस दलीलें दी जा रही हैं ।

विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन भी एक ऐतिहासिक परिवर्तन की आहट है परिभाषा प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक नोम चॉमस्की ने वैश्वीकरण का अर्थ अंतराष्ट्रीय एकीकरण माना है इस एकीकरण में भाषा की अहम् भूमिका होगी और जो भाषा व्यापक रूप से प्रयोग में रहेगी, उसी का स्थान विश्व में सुनिश्चित होगा नोम चॉमस्की के अनुसार जब विश्व एक बड़ा बाजार हो जाएगा तो बाजार में व्यापार करने के लिए जिस भाषा का प्रयोग होगा उसे ही प्राथमिकता दी जाएगी और वही भाषा जीवित रहेगी । वेट्टे क्लेर रोस्सर ने कहा था कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया अचानक ही बीसवीं सदी में नहीं उत्पन्न हुई अपितु दो हजार वर्ष पूर्व भी भारत ने उस समय विश्व के व्यापार क्षेत्र में अपना सिक्का जमाया था जब वह अपने जायकेदार मसालों, खुशबूदार इत्रों एवं रंग बिरंगे कपड़ों के लिए जाना जाता था । ऐसे समय भारत का व्यापार इतना व्यापक था कि रोम की संसद ने एक विधेयक के माध्यम से अपने लोगों के लिए भारतीय कपड़े का प्रयोग निषिद्ध करार दिया ताकि वहां के सोने के सिक्कों को भारत ले जाने से रोका जा सके तभी से भारत की उक्ति वसुधैव कुटुंबकम प्रचलित हुई हमारे लिए वैश्वीकरण का मुद्दा कोई नया नहीं है विश्वस्तर पर सरकारी कामकाज हेतु अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, चीनी, रूसी और अरबी भाषाओं को अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं का स्थान प्राप्त है । हिंदी भी संयुक्त राष्ट्र संघ में अंतर्राष्ट्रीय भाषा का स्थान प्राप्त करने हेतु निरंतर प्रयासरत हैं अंतर्राष्ट्रीय वैश्विक भाषा (ग्लोबल लेंग्वेज) के रूप में हिंदी की उपयोगिता को विश्व का व्यापारिक समुदाय अब भली–भांति समझ भी चुका है । आंकड़े दर्शाते हैं कि सवा सौ करोड़ की आबादी वाले इस राष्ट्र में चालीस करोड़ से अधिक लोगों की मातृभाषा हिंदी है । पैंतीस करोड़ से अधिक लोग इस भाषा का प्रयोग दूसरी भाषा के रूप में करते हैं । लगभग तीस करोड़ लोग ऐसे हैं जिनका किसी न किसी रूप में हिंदी भाषा के साथ सरोकार जुड़ा हुआ है ।

कहने का आशय यह है कि देश की आबादी के लगभग तीन चौथाई से अधिक लोगों में हिंदी संपर्क का माध्यम है । बाजारवाद और हिंदी वैश्वीकरण का अर्थ व्यापक तौर पर बाजारीकरण है आज मानव जीवन का प्रत्येक क्षेत्र बाजारवाद से प्रभावित है । मुक्त व्यापार और वैश्वीकरण के युग में भारत में हिंदी भाषा संप्रेषण का एक बड़ा बाजार है । प्रसिद्ध समाज विज्ञानी प्रोफेसर आनंद कुमार से वैश्वीकरण के आधार तत्वों के रूप में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया, मध्यम वर्ग, बाजार, संचार माध्यम, बहुउद्देशीय कंपनियां, आप्रवासन और संपन्नता नामक सात तत्वों को प्राथमिकता प्रदान की है । इनमें

से एक देशी भाषाओं के अनुकूल बाजार और दूसरा संचार माध्यम प्रमुख हैं । बहुभाषिक समाज व्यवस्था वाले भारत में हिंदी को वैश्विक बाजार ने संपर्क व व्यवहार की भाषा के रूप में अपनाया भारत दुनियाभर के उत्पाद निर्माताओं के लिए एक बड़ा खरीदार और उपभोक्ता बाजार है । दुनिया अब भली भांति इस बात को पहचान चुकी है कि यदि विशाल आबादी वाले भारतीय मध्यमवर्गीय बाजार तक उसे अपनी पहुंच बनानी है तो हिंदी को अपनाना ही होगा । आज बहुराट्रीय और देशी कंपनियों की लगभग सत्तर प्रतिशत से अधिक वस्तुएं हिंदी के माध्यम से जनमानस तक हंच रही हैं । वैश्वीकरण में आर्थिक और सास्कृतिक दोनों दृष्टि से हिंदी की भूमिका बढ़ी है नई बाजार संस्कृति अब तक स्वायत्त रहे समाजों और संस्कृतियों के रहन–सहन, आचार–विचार, भाषा–भूषा और मूल्यबोध सभी का अपने तरीके से अनुकूलन कर रही है । बाजारीकरण की व्यवस्था में हिंदी भाषा इसका माध्यम बनकर उभरी है । प्रिंट एवं इलैक्ट्रानिक मीडिया और हिंदी टेलिविजन पर प्रसारित कार्यक्रम चाहे किसी भी विषय से संबंधित हों उन्हें व्यावसायिकता की दृष्टि से हिंदी एक बहुत बड़ा क्षेत्र उपलब्ध कराती है । टेलीविजन ने इस तरह हिंदी के भाषा वैविध्य और संप्रेषण क्षमता को सर्वथा नई दिशाएं प्रदान की हैं ।

उद्देश्य

1. हिंदी भाषा का विश्वव्यापी रुप पर अधययन करना ।
2. वर्तमान में हिन्दी व्यापकता पर अधययन करना ।

वैश्वीकरण के इस सघन और उत्कट समय में मीडिया को वर्चस्वशाली भाषा और उच्च तकनीकी विकास का स्त्रोत तथा आधुनिकता के मूल्यों का वाहक माना जा रहा है । विज्ञापनों की भाषा और प्रमोशन वीडियो की भाषा के रूप में सामने आने वाली हिंदी शुद्धतावादियों को भले ही न पच रही हो, युवा वर्ग ने उसे देश भर में अपने सक्रिय भाषा कोष में शामिल कर लिया है । यह हिंदी का ही कमाल है कि आज राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उत्पादों को हम गांवों में प्राप्त कर सकते हैं समाचार पत्रों टी वी की विज्ञापन संस्कृति का इसमें बहुत बड़ा योगदान है ।

आजकल साबुन और टूथपेस्ट जैसी दैनंदिन उपयोग की वस्तुओं से आगे चलकर अब मोटर साईकिल, कार, फ्रिज, टीवी, वॉशिंग मशीन, ब्रांडेड कंपनियों के कपड़े आदि के विज्ञापन हिंदी में प्रसारित किए जा रहे हैं । छोटे–छोटे कस्बों तक सौंदर्य प्रसाधन के ब्यूटी पार्लर खुल चुके हैं । सैलून जैसे अब गजरे जमाने का शब्द लगने लगा है बड़े–बड़े होर्डिंग्स पर हिंदी में लिखे लोक लुभावन विज्ञापनों और नारों ने शहरी सीमा को लांघकर कस्बों और गांवों में जगह बना ली है टी वी और मोबाइल से शायद ही अब देश का कोई कोना अछूता बचा होगा । वैश्वीकरण बाजार के विकास और विस्तार में प्रिंट एवं इलैक्ट्रॉनिक माडिया पर प्रसारित विज्ञापनों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका है । अभिव्यक्ति कौशल के विकास का अर्थ भाषा का विकास ही है बाजारीकरण ने आर्थिक उदारीकरण, सूचनाक्रांति तथा जीवन शैली के वैश्वीकरण की जो स्थितियां भारत की जनता के सामने रखी, इसमें संदेह नहीं कि उनमें पड़कर हिंदी भाषा के अभिव्यक्ति कौशल का विकास ही हुआ । आज प्रचार माध्यमों की भाषा हिंदी होने के कारण वे भारतीय परिवार और सामाजिक संरचना की उपेक्षा नहीं कर सकते विज्ञापनों से लेकर धारावाहिकों तक में हिंदी अपनी जड़ों से जुड़ी हुई है आरंभ में मीडिया में छोटे पर्दे और बड़े पर्दे पर स्टार टी वी लाए तो उन्हें एहसास हुआ कि अंग्रेजी माध्यम से बढ़िया

प्रोग्राम भी शहरी वर्ग के इलीट क्लास तक ही सीमित हैं । परंतु ज्योहिं स्टार टीवी ने हिंदी में कार्यक्रम प्रसारित करने आरंभ किए तो उसके दर्शकों में बेतहाशा वृद्धि हुई भारत में अब डिस्कवरी, सोनी, कलर, आज तक, एनडीटीवी, जी टीवी आदि अनोकानेक चौनल हिंदी में अपने कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं ।

आज की परिस्थितियों में समाचार विश्लेषण तक में कोड मिश्रित हिंदी का प्रयोग धड़ल्ले से हो रहा है । पौराणिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, पारिवारिक, जासूसी, वैज्ञानिक और हास्य प्रधान अनेक प्रकार के धारावाहिकों का प्रदर्शन विभिन्न चौनलों पर जिस हिंदी में किया जा रहा है उसमें विषय संदर्भित व्याहारिक भाषा रूपों और कोडों का मिश्रण किया जाता है जिस सहज ही जनस्वीकृति मिल रही है ।

हिंदी पत्रकारिता में सुविधा ने बाजारी व्यवस्था प्रकार का साहित्य प्रचुर शिक्षा और परस्पर व्यवहार इंटरनेट और वेबसाइट की पूर्णरूप से ऑनलाइन पत्र दरवाजे खोल दिए हैं यही हिंदी पत्रकारिता में डिजिटल तकनीकी और बरंगे चित्रों के प्रकाशन की सुविधा ने बाजारी व्यवस्था को परिवर्तित कर दिया है । आज हिंदी में विविध प्रकार का साहित्य प्रचुर मात्रा में प्रकाशित हो रहा है तथा मनोरंजन, ज्ञान, शिक्षा और परस्पर व्यवहार के विभिन्न क्षेत्रों में उसका विस्तार हो रहा है इंटरनेट और वेबसाइट की सुविधा ने पत्र व पत्रिकाओं के ई संस्करणों तथा पूर्णरूप से ऑनलाइन पत्र व पत्रकाओं को उपबल्ध कराकर सर्वथा ई दुनिया के दरवाजे खोल दिए हैं

यही कारण है कि आज हिंदी की अनेक पत्रिकाएं इस रूप में कहीं भी और कभी भी सुलभ हैं तथा इंटरनेट पर हिंदी में अब हर प्रकार की जानकारी प्राप्त हो रही है । कंप्यूटर युग में अनुवाद कार्य का विस्तार कंप्युटर युग में विश्व और सिकुड़ गया है । अब घर बैठे विश्व में कहीं भी संपर्क स्थापित किया जा सकता है वैश्वीकरण के इस दौर में अनुवाद के कार्य का विस्तार दिनौदिन बढ़ता जा रहा है । वह दिन दूर नहीं जब तकनीक के आदान–प्रदान में अनुवाद अपनी विशेष भूमिका अदा कर पाएगा इंटरनेट के माध्यम से हिंदी की विभिन्न वेबसाइट, चिट्ठाकार और अनेकानेक सामग्री उपलब्ध हो रही है । यूनिकोड के माध्यम से कंप्युटर पर अब किसी भी भाषा में कार्य करना न केवल सरल ही हो गया है अपितु जिस भाषा में हम अपने सिस्टम पर सामग्री तैयार करते हैं उसे विश्व के किसी भी कोने में न केवल यथावत पा ही सकते हैं अपितु इच्छानुसार परिवर्तित भी कर सकते हैं आज हिंदी के स्वरूप, क्षेत्र एवं प्रकृति में बदलाव आया है । आज हिंदी समूचे भूमंडल की एक प्रमुख भाषा के रूप में उभरी है आज की बदलती परिस्थितियों में हिंदी भाषियों और भारत की शक्ति के नाते ही सही अमेरीकी सरकार के साथ साथ कम्प्यूटरक किंग कहे जाने ववाले बिल गेट्स भी हिंदी के उपयोग में दिलचस्पी दिका रहे हैं गूगल के मुख्य अधिकारियों का मानना है कि भविष्य में स्पेनिश नहीं बल्कि अंग्रेजी और चीनी के साथ हिंदी ही इंटरनेट की प्रमुख भाषा होगी । आजकल गूगल के माध्यम से अंग्रेजी भाषा से हिंदी भाषा में स्पीच से सीधा अनुवाद भी उपलब्ध होने लग गया है गूगल सॉफ्टवेयर से अंग्रेजी डाक्यूमेंट को हिंदी भाषा में तुरंत अनुदित करने की सुविधा उपलब्ध हो गई है ।

भारत की सांस्कृतिक विरासत और हिन्दी :

भारत की सांस्कृतिक विरासत इतनी व्यापक है कि विश्व में इसकी तुलना किसी अन्य सभ्यता और संस्कृति से नहीं की जा सकती है। आपको मालूम ही होगा कि भारतीय वेद अर्थात ऋग्वेद को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति एवं विश्व थाती (धरोहर) का दर्जा तो पहले ही मिल चुका था। अब अंतर्राष्ट्रीय

स्तर पर 175 देशों के समर्थन से संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता दी है। 10 जनवरी संसार के कई देशों में विश्व हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत और हिन्दी दोनों का वर्चस्व विश्व स्तर पर दिनों दिन बढ़ता ही जारहा है। यह हमारे लिए गर्व का विषय है।

सार्वभौमीकरण और हिन्दीरू नब्बे के दशक के उपरान्त जब उदारीकरण व सार्वभौमीकरण अर्थात लिबरलाइज़ेशन एवं ग्लोबलाइज़ेशन का दौर भारत में चला तब ज्यादातर विचारकों का मत था कि ग्लोबलाइज़ेशन से भारत के आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य में आमूचूल परिवर्तन हो जाएगा।

वर्तमान में हिन्दी व्यापकता

वर्तमान में हिन्दी देश के मानचित्र पर व्यापक फलक पर छायी हुई जनभाषा है.यह न केवल सम्पर्क भाषा के रूप में देश को एक सूत्र में बांधे रखने का महती काम कर रही है, साथ ही अपने लचीलेपन व लोकप्रियता तथा सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण रखने की क्षमता के कारण ही हिन्दी का राजभाषा का दर्जा कायम है, हालांकि इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा दिए जाने की मांग हर कहीं से उठती रही है, पर क्षेत्रीयता के चलते अभी यह स्थिति नहीं बन पाई है। आज हिन्दी व्यापार,ज्ञान–विज्ञान,अध्यात्म और संस्कृति के विभिन्न आयामों की छटा को समूचे विश्व में प्रसारित कर अपनी पहचान का दायरा भी बढ़ा रही है। वर्तमान में विश्व के 33 देशों में हिन्दी भाषा बोली एवं समझी –जाती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय हिंदी विश्व में तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा थी परन्तु आज यह दूसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा का दर्जा प्राप्त कर चुकी है।

भारत विश्वभर में सर्वाधिक विविधताओं वाला देश है। बहुभाषिकता की दृष्टि से भी यह तथ्य पूर्णरूपेण सत्य है। हजारों मातृभाषाएं यहां अनेक वर्षों से बोली जाती रही है। इन्ही भाषाओं में से कुछ ने देश को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया .पुरातन समय में जो काम संस्कृत कर रही थी वही आज हिंदी कर रही है। हिंदी आज समाचार पत्रों,संचार माध्यमों में प्रयोग बाहुल्य से अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है।यह भाषा अनुवाद तथा मौलिक लेखन जैसी सचेतन दृष्टि से आगे बढ़कर प्रसाद की 'उल्का लेकर अमर शक्तियाँ,खोज रही ज्यों खोया प्रात' पंक्ति का अनुसरण करती दिखाई दे रही हैं.

क्रिया विधि

यह शोध हिन्दी भाषा का विश्वव्यापी रुप में व्यक्त किया गया है इसमें हिंदी प्राथमिक शोध हिन्दी विश्व में सबसे अधिक बोली व समझी जाती है उसकी व्यापकता को दर्शाता है वही द्वितीय शोध रिपोर्ट पाठय – पुस्तको ,से संग्रहित किया गया है जो हिंदी भाषा की महत्ता को दर्शाता है

शोध का विश्लेषण

अब तक प्रस्तुत शोध रिपोर्टों का सार: हिन्दी विश्व में सबसे अधिक बोली व समझी जाती है तथा यह विश्व की सबसे लोकप्रिय भाषा है, यह मैंने अपनी शोध में सिद्ध किया है। इस शोध को समय–समय पर अद्यतन किया जाता रहा है ताकि हर दो तीन साल के कालखण्ड में भाषा गत परिदृश्य में आए परिवर्तनों को रेखांकित किया जा सके। अब तक प्रकाशित हुई शोध रिपोर्टों कासार निम्नवत है:

शोध रिपोर्ट का वर्ष	विश्व में हिंदीभाषा जानने वाले लोग	विश्व में चीनी भाषा जानने वाले लोग	अंतर
शोध रिपोर्ट 2007	800	920	+ 103
शोध रिपोर्ट 2009	1022	967	+ 133
शोध रिपोर्ट 2012	1023	1050	+150
शोध रिपोर्ट 2015	1100	1100	+200
शोध रिपोर्ट 2020	1400	1300	+350

स्रोत: डॉ.जयन्ती प्रसाद नौटियाल द्वारा किया गया शोध अध्ययनसन् 2020 (अनुमानित आँकड़े)

यह शोध रिपोर्ट इस बात का प्रमाण हैं कि हिन्दी जानने वालों की संख्या विश्व में सबसे अधिक हैं तथा यह निरंतर बढ़ती जा रही है। इससे यह सिद्ध होता है कि हिन्दी विश्व की सबसे लोक प्रिय भाषा है।

विश्व में हिन्दी शिक्षण एवं प्रशिक्षण का प्रभाव :

विश्व में हिन्दी की लोकप्रियता को देखते हुए विश्व के 150 से अधिक देशों में हिन्दी शिक्षण एवं प्रशिक्षण के अनेक शिक्षण माध्यम शुरु हो गए हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि विश्व में हिन्दी के प्रति अधिक झुकाव है। हिन्दी अध्यापन; अनेक हिन्दी संघों, हिन्दी संस्थाओं द्वारा चलाया जा रहा है। केन्द्र सरकार द्वारा भी हिन्दी अध्ययन हेतु हिन्दी शिक्षण योजना आदि चलाई जा रही हैं। विश्व के अनेक विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्व विद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन–अध्यापन तेज़ी से चल रहा है। भारत में केन्द्र सरकार के प्रयासों व स्वयं सेवी संस्थाओं के प्रयासों से हिन्दी सीखने वालों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। इसे निम्न लिखित तालिका से समझा जा सकता है:

हिन्दीविश्व की सबसे लोकप्रिय भाषा:

'हिन्दी विश्व में सबसे लोकप्रिय भाषा है'– यह तथ्य भी निर्विवाद रूप से सिद्ध हो चुका है। इस तथ्य को अब अधिकांश विद्वान स्वीकार करने लगे हैं। इसका एक प्रमाण यह भी है कि भारत के प्रधान मंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ सहित विश्व के अनेक देशों में अपना व्याख्यान हिन्दी में ही दिया, यह व्याख्यान सम्पूर्ण विश्व में लोगों ने बड़े चाव से सुना व समझा। आदरणीय मोदी जी के सम्मान में इन कार्यक्रमों को भी हिन्दी में ही प्रसारित किया गया था। हिन्दी भाषा की लोकप्रियता और उसका प्रभा मंडल केवल भारत या भारत के पड़ोसी देशों तक ही सीमित नहीं है बल्कि सुदूर कैरेबियाई राष्ट्रों तक फैला है। मारीशस, फीजी, गुयाना, सूरीनम, ट्रिनिडाड और टोबेगो जैसे देशों में यह राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित है। इतना ही नहीं बल्कि इंडोनेशिया, अमेरिका, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका और खाड़ी के देशों में हिन्दी बहुत लोकप्रिय है। विश्व की 18: जनता हिन्दी जानती है। इसलिए अनेक देश अपने प्रिंट मीडिया और इलैक्ट्रानिक मीडिया में हिन्दी को स्थान दे रहे हैं। इतना ही नहीं भारतीय फिल्में और टी.वी चौनलों के कार्यक्रम भी विश्व के कई देशों में चावसे देखे जाते हैं।

Copyright@ijaer.org

युवा भारत की आत्मा और पहचान है हिन्दी :

आनेवाले समय में हमारा युवा भारत, विश्व की महाशक्ति बनने जा रहा है। इसलिए हिन्दी के प्रति विश्व स्तर पर लोकप्रियता में निरंतर बढ़ोत्तरी हो रही है। इस प्रवृत्ति से सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि निकट भविष्य में हिन्दी को संयुक्त संघ की अधिकृत भाषा के रूप में भी महत्व मिलेगाव यह विश्व भाषाश के पद पर भी आसीन होगी। भारत में तो हर भारतीयों के दिल और आत्मा में इसको स्वीकार्यता मिल चुकी है। शहिन्दी विरोधश बीते कल की बात हो चुकी है। समस्त दक्षिण भारत में हिन्दी धीरे–धीरे सम्पर्क भाषा का ध्वज धारण किए आगे बढ़ती जा रही है। यह आनेवाले समय का संकेत है। धार्मिक स्थलों, पर्यटन स्थलों पर तो हिन्दी पहले से ही लोक प्रिय थी। अब हिन्दी, उद्योग, व्यापार, शिक्षा एवं मनोरंजन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान ले चुकी है। भारत की युवा पीढ़ी की पसंदीदा भाषा हिन्दी ही है। आज भारत की युवा पीढ़ी भाषा के मामले में व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाती है। अतः यह दृष्टिकोण हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ाने में और भी अधिक सहायक होगा।आर्थिक दृष्टि से विदेशी पूँजीवाद फिर से शुरु हो जाएगा तथा हमारा सांस्कृतिक ताना–बाना ध्वस्त होकर पूरी तरह विदेशी संस्कृति हम पर हावी हो जाएगी व हमारी भारतीय भाषाएँ तथा विशेषतः हिन्दी विलुप्त प्रायः हो जाएगी। हिन्दी व भारतीय भाषाओं का स्थान अंग्रेजी ले लेगी। परन्तु यह हर्ष का विषय है कि ऐसा कुछ नहीं हुआ जैसा कि पूर्वानुमान लगाया जारहा था। यह सत्य सिद्ध नहीं हुआ. ऐसा ही चिंतन उस दौर में भी आया था जब भारत में कम्प्यूटरों का आगमन हुआ था। अर्थात् 1980 के दशक से यह चिंतन चलने लगा था और लोगों को यही भय सता रहा था, परन्तु भारत में भाषा प्रौद्योगिकी ने काफी विकास किया है तथा आज हम; सब काम हिन्दी में व क्षेत्रीय भाषाओं में करने में सक्षम हैं। सोशियल मीडिया में भी हिन्दी काफी तेज़ी से आगे बढ़ रही है।

उपसंहार

हिंदी भाषा ही हमारे देश की एकमात्र ऐसी भाषा है जो व्यक्तित्व विकास शिक्षा संस्कृति एवं सभ्यता का पाठ हमारे देशवासियों को पढ़ाती रही है हमारी सभ्यता को हिंदी भाषा ने ही अभी तक संजो कर रखा है जो हमारी संस्कृति सभ्यता को समेटे हुए हैं वैश्वीकरण के इस दौर में अनुवाद के कार्य का विस्तार दिनौदिन बढ़ता जा रहा है । भारत विश्वभर में सर्वाधिक विविधताओं वाला देश है। बहुभाषिकता की दृष्टि से भी यह तथ्य पूर्णरूपेण सत्य है। हजारों मातृभाषाएं यहां अनेक वर्षों से बोली जाती रही है। इन्ही भाषाओं में से कुछ ने देश को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया .पुरातन समय में जो काम संस्कृत कर रही थी वही आज हिंदी कर रही है। हिंदी आज समाचार पत्रों,संचार माध्यमों में प्रयोग बाहुल्य से अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है इसलिए अनेक देश अपने प्रिंट मीडिया और इलैक्ट्रानिक मीडिया में हिन्दी को स्थान दे रहे हैं। धार्मिक स्थलों, पर्यटन स्थलों पर तो हिन्दी पहले से ही लोक प्रिय थी। अब हिन्दी, उद्योग, व्यापार, शिक्षा एवं मनोरंजन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान ले चुकी है। भारत की युवा पीढ़ी की पसंदीदा भाषा हिन्दी ही है। आज भारत की युवा पीढ़ी भाषा के मामले में व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाती है। अतः यह दृष्टिकोण हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ाने में और भी अधिक सहायक होगा।

संदर्भ सूचि:

[1]. .श्रीमती पूनम जुनेजा, विश्व में हिंदी पत्रिका–2011 विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस,

[2]. श्री बालेंदु शर्मा दधीच, हिंदी ब्लॉगिंग:कुछ पुनर्विचार, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका–2011, श्रीमती पूर्णिमा वर्मन, वेब पत्रकारिता:कल आज और कल, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका–2011,

[3]. श्री विजय सती, हंगरी मे हिंदी:गतिविधियां और प्रेरणा के मूल स्रोत, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका–2011,

[4]. .प्रो. विजयकुमारन, स्पेन में हिंदी और भारतीय सिध्दांतविषयक पाठ्यचर्चा, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका–2011

[5]. डॉ. दिनेश श्रीवास्तव, ऑस्ट्रेलिया में हिंदी, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका–2011

[6]. आलेसिया माकोव्यकाया, बेलारूस में मेरी हिंदी:बचकानी अभिरूचि से लेकर व्यावसायिक कार्य तक, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका–2011

[7]. .श्रीमती अर्चना पैन्यूली, साहित्य में प्रवासी हिंदी साहित्य, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका–2011.

[8]. प्रो. राजभजन सीताराम, दक्षिण अफ्रीका में हिंदी साहित्य, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका–2011.

[9]. श्री. सलेश कुमार, फीजी का हिंदी साहित्य, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका–2011

[10]. .डॉ. इला प्रसाद, अमेरिका का साहित्यिक परिदृश्य तथा अमेरिका में हिंदी का भविष्य, विश्व में हिंदी पत्रिका–2011.

[11]. .डॉ. सुधा ओम , अमेरिका के हिंदी कथा साहित्य में अमेरिका परिवेश, आलेख, विश्व में हिंदी पत्रिका–2011.

[12]. डॉ जयन्ती प्रसाद (2015) "विश्व में हिंदी" नौटियाल निदेशक (तकनीकी/कार्यान्वयन) के निजी सचिव राजभाषा विभाग, एनडीसीसी–2 बिल्डिंग, चतुर्थ तल, जयसिंह रोड, नई दिल्ली 110001.